डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2012-2014
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 मई 2012 : मूल्य - पाँच रुपये

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष : दसवां | अंक : पहला | मई-2012

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा के आदेशानुसार प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाकर 1027 अग्रसेन नगर, श्रीगंगानगर-335 001 राजस्थान से प्रकाशित किया। फोन 099 50 55 66 71, 098 71 50 19 99
● उपसम्पादक : नन्दिनी ● विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया फोन 099 28 92 53 04
● अनुवादक : मास्टर प्रताप सिंह ● संपादकीय सहयोगी : ज्योति सरदाना व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम - 16 पी.एस., वाया- मुकलावा, तहसील - रायसिंहनगर - 335 039, जिला श्रीगंगानगर (राजस्थान)

4 मना रे तेरी आदत
(एक शब्द)

5 नशा छोड़ें
परम सन्त अजायब सिंह जी
महाराज द्वारा एक संदेश

15 सच और झूठ
(वारां - भाई गुरदास जी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी
(बैंगलोर)

27 धान की सेवा
परम सन्त कृपाल सिंह जी
महाराज के मुखारविन्द से

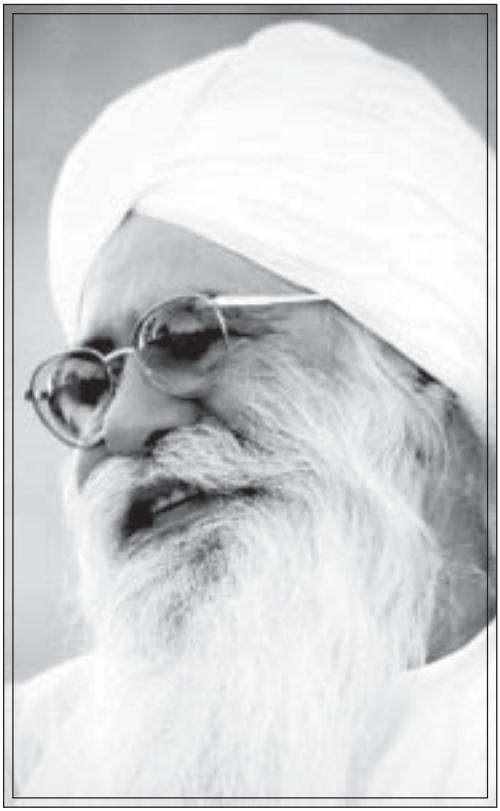

मना रे तेरी आदत

मना रे तेरी आदत ने, कोई बदलेगा हरिजन सूर, *(2)*

1. *चोर जुआरी क्या बदलेंगे, माया के मजदूर,* *(2)*
   भांग धतूरा चिलम छूतरा, रहे नशे में चूर, *मना रे .....*

2. *पाँच विषयों में लटपट रहता, सदा मतंगे चूर,* *(2)*
   इनको सुख सपने में भी नाहीं, रहे मालिक से दूर, *मना रे .....*

3. *सुरत सिमरत वेद की रीति, सतसंग करो जरूर,* *(2)*
   जन्म–जन्म के पाप कटेंगे, हो जाएंगे माफ कसूर, *मना रे .....*

4. *भक्ति प्रेम गुरु रामानंद लाई, कबीर करी भरपूर,* *(2)*
   कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, वाजे अनहद धूर, *मना रे .....*

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा एक महत्त्वपूर्ण संदेश

नशा छोड़ें

एक प्रेमी : *माँसाहारी खाने, शराब पीने या नशीले पदार्थों की आदत को कैसे छोड़ सकते हैं जबकि ये चीज़े इंसान पर इतनी हावी हो चुकी होती हैं कि वह अपने आपको असहाय महसूस करता है ?*

बाबा जी : जिन्हें आदत पड़ गई है जो मन के दास बन गए हैं जिन्होंने अपने आपको मन के हवाले कर दिया है वे ही ऐसी चीजों के आदी है। जो अपने ऊपर दया करते हैं जिनके दिल में गुरु के लिए प्रेम है वे इन आदतों से छुटकारा पा सकते हैं। कोई भी बुरी चीज़ आपके पास चलकर नहीं आती आप ही उसके पास चलकर जाते हैं।

महाराज सावन सिंह जी का एक नामलेवा शराब पिया करता था। एक बार उसने महाराज सावन सिंह जी से कहा, ''महाराज जी! मैं शराब नहीं छोड़ सकता क्योंकि यह मुझे नहीं छोड़ती।'' महाराज जी ने कहा, ''प्यारेया! शराब तुझे नहीं छोड़ती या तू शराब को नहीं छोड़ना चाहता? शराब अपने आप तुम्हारे पास नहीं आती। तुम शराब खरीदकर पीते हो फिर तुम यह कैसे कह सकते हो कि शराब तुम्हें नहीं छोड़ती।''

महाराज सावन सिंह जी कहते हैं कि जिन्हें शराब पीने की आदत होती है शराब को याद करते ही उन्हें शराब पीने की इच्छा होती है अगर आप किसी भी आदत को छोड़ना चाहते हैं तो उसे याद न करें, उसके बारे में न सोचें तो उसे छोड़ना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा।

मुगल बादशाह बाबर को भांग पीने की आदत थी। उस समय के लोग यह समझते थे कि फकीर, सन्त और धार्मिक लोग किसी न किसी नशीले पदार्थ के आदी होते हैं; नशीले पदार्थों के सेवन से ही वे गहरे

ध्यान में बैठ सकते हैं। नशीले पदार्थों को बढ़ावा देने के लिए जो लोग उन्हें इस्तेमाल करते हैं वे ऐसी अफवाहे उड़ाते कि सन्त-महात्मा भी नशीले पदार्थों के आदी होते हैं लेकिन यह सच नहीं था।

जब बाबर ने गुरु नानकदेव जी समेत कई लोगों को जेल में डाल दिया, वहाँ सभी लोगों से आटे की चक्की चलवाई जाती थी। तब किसी आदमी ने बाबर को बताया कि आपने दूसरे लोगों के साथ एक पूर्ण सन्त को कैद कर लिया है। दूसरे लोग हाथों से चक्की पीस रहे हैं लेकिन पूर्ण सन्त आँखें बंद करके गहरे ध्यान में बैठा हुआ है, वह बहुत नशे में है उसकी चक्की अपने आप ही चल रही है।

बाबर को अपनी गलती का एहसास हुआ। जब उसने गुरु नानकदेव जी को गहरे ध्यान में देखा तो कहा कि महाराज जी! मुझे माफ करें और उसने गुरु नानकदेव जी को भांग पेश की कि यह आपको और नशा देगी। गुरु नानकदेव जी ने मुस्कुराकर कहा, ''बाबर! मैं भांग का आदी नहीं हूँ मुझे 'नाम' का नशा है। भांग का नशा एक दो घंटे तक रहेगा लेकिन नाम का नशा सदा रहने वाला है।

जो लोग यह कहते हैं कि सिमरन के समय और गुरु की याद में भी हम नशें को नहीं छोड़ सकते, यह केवल बकवास है और कुछ नहीं। मुझे ऐसे सख्त शब्द इस्तेमाल करने के लिए माफ करें। मैं यह कहूंगा कि ऐसे लोगों को सिमरन की अहमियत के बारे में कोई ज्ञान नहीं। अगर आप ईमानदारी और पूरे दिल से सिमरन करते हैं तो सिमरन आपको इतना नशा, इतना विश्वास देता है कि आपको किसी चीज़ का आदी होने की जरूरत महसूस नहीं होगी।

जिन्हें अपनी सेहत से प्रेम नहीं वही लोग ऐसा कहते हैं। वे बहुत बड़े धोखे में हैं और दूसरे लोगों को भी धोखा देते हैं। आप लोगों के

पास पूर्ण गुरु का दिया हुआ 'पाँच शब्द' का सिमरन है जिसके पीछे गुरु का भजन-अभ्यास, मेहनत और त्याग काम करता है। आपको जो सिमरन मिला है वह बहुत शक्तिशाली है।

मेरे पास बाबा बिशनदास जी का दिया हुआ 'दो-शब्द' का सिमरन था। उस समय सुंदरदास मेरे साथ रहा करता था, हम दोनों बहुत भजन-अभ्यास करते थे। वहाँ एक आदमी हमें हर रात देखने के लिए आता। एक दिन मैं और सुंदरदास गुरु के बारे में प्यार भरी बातें कर रहे थे, हम दोनों परमात्मा के प्रेम में बहुत मस्त थे। हम इस तरह बातें कर रहे थे जैसे हमने पी रखी हो। जब वह आदमी आया उसने हमें ऐसी बातें करते हुए सुना तो उसने सोचा शायद हमने ऐसी कोई चीज़ खा ली है जिससे हमें नशा आ गया। वह इसी उम्मीद में वहाँ एक घंटा या इससे ज्यादा बैठा रहा लेकिन उसने हममें कोई बदलाव नहीं देखा। उसने हमारी चारपाई के नीचे और बाकी जगह देखा कि उसे शराब की खाली बोतलें मिल जाएं जब उसे कुछ नहीं मिला तो वह वापिस अपने घर चला गया।

अगले दिन उसने हमसे माफी मांगी कि कल रात मैं यहाँ आया था और मुझे लगा कि आप दोनों ने शराब पी हुई है। मैंने आपके बारे में गलत सोचा कृपया मुझे माफ करें। आप देख लें! 'दो-शब्द' के सिमरन में इतना नशा आ गया कि उस आदमी को लगा कि हम नशे में हैं। आपके पास तो 'पाँच-शब्द' का सिमरन है अगर आप ईमानदारी से सिमरन करें तो आपको कितना नशा आएगा!

मैं उस घटना का चश्मदीद गवाह हूँ जब अभ्यास में बैठे हुए सुंदरदास की टाँग जल गई थी। वह अभ्यास में बैठा सिमरन में इतना खोया हुआ था कि उसे अपने शरीर का भी ख्याल नहीं रहा। उसकी टाँग पर जलती हुई लकड़ी गिर गई और उसकी टाँग जल गई। जब वह

अभ्यास से उठा तो बोला आज मुझे अभ्यास में जितना रस आया उतना पहले कभी नहीं आया। यह है सिमरन का मतलब।

प्यारेयो! अगर आप ईमानदारी से पूरे दिल से सिमरन करें, आपको अपने शरीर और दूसरी चीज़ों का भी कुछ पता न हो तो आप देखेंगे कि आपको कितना नशा आता है। जब आप ऐसा सिमरन करते हैं तो सवाल ही नहीं उठता कि कोई बुरी आदत आपको तंग करे।

गुरु नानक साहब कहते हैं कि सिमरन करने वालों की ऐसी हालत है कि वे दूसरे लोगों से कहते हैं, ''मैं अपने जीवन साथी के साथ नहीं हूँ और न ही मैंने उसे कभी देखा है फिर भी मैं अपने आपको शादी-शुदा कहता हूँ।''

सबको बुरी आदतें छोड़ देनी चाहिए लेकिन आदत तभी छूटती हैं जब आप उसे छोड़ना चाहें। आपकी सेहत अच्छी होगी तभी आप ज्यादा समय तक अभ्यास में बैठ सकेंगे और अपने ध्यान को टिका सकेंगे। सतसंगी को 'नाम' की अहमियत को समझना चाहिए। अंदर जाने की और अपने आपको 'शब्द-नाम' से जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

आज की युवा पीढ़ी नशीले पदार्थों का सेवन क्यों करती है? क्योंकि वे पढ़ना नहीं चाहते, दुनियां का कोई काम नहीं करना चाहते और नशों में पड़ जाते हैं। वे बचपन में ही अपनी जवानी और शक्ति खो देते हैं फिर वे नशों द्वारा बचाव ढूढ़ते हैं। जब आप उन्हें नशे के नुकसान के बारे में समझाते हैं तो वे समझना नहीं चाहते क्योंकि वे अपना उत्साह और शक्ति खो चुके होते हैं।

मेरा अपना अनुभव है कि हमारे गाँव में बीस साल की उम्र तक लड़के-लड़कियाँ रात में भी एक साथ खेला करते थे लेकिन किसी में भी काम के बारे में कोई बुरी सोच नहीं थी। आजकल एक छोटे से लड़के को भी काम के बारे में पता है। ऐसा इसलिए है कि उस समय

माता-पिता बच्चे के सामने एक पलंग पर भी नहीं बैठते थे। बच्चे के सामने चूमने या गले लगने का तो सवाल पैदा ही नहीं होता था इसलिए बच्चों को उस बारे में कुछ पता नहीं था। आजकल हम कितने आजाद हो गए है हम अपने बच्चों के सामने एक-दूसरे को चूमते और गले लगाते हैं। हम जो भी करते हैं बच्चे हमारी नकल करते हैं।

हमारे गाँव के गुरुद्वारे में एक उदासी साधु रहता था। वह शराब, सिगरेट पीता और बाकी ऐसी सभी चीज़ें करता लेकिन मुझे पता नहीं था कि ये चीज़ें कितनी बुरी हैं क्योंकि मैं उस समय छोटा था। वह रंगे हुए कपड़े पहनता था; मुझे लगा कि वह एक अच्छा महात्मा है। मैं उसके पास जाकर समय बिताता। मेरे पिताजी उस साधु को जानते थे उन्होंने उस साधु से कहा कि वह मुझे अपने पास न आने दे लेकिन उसने पिताजी के कहे मुताबिक कुछ नहीं किया। मेरे पिताजी ने मुझे भी समझाने की कोशिश की लेकिन मैंने उनकी बात नहीं सुनी क्योंकि मुझे लगता था कि वह एक अच्छा साधु है।

मेरे माता-पिता ने मुझे उस साधु के पास जाने से रोकने के लिए एक उपाय सोचा। मैं उस साधु के पास गया हुआ था, वह चारपाई पर बैठकर सिगरेट पी रहा था और मैं जमीन पर चौंकड़ी लगाकर बैठा था। अचानक पीछे से मेरे पिता जी आए और उन्होंने मेरी गर्दन पर अपना पैर मारा और मुझे बुरी तरह पीटा। मैं रोने लगा और भागने लगा क्योंकि मैं डर गया था कि वह फिर से मुझे पीटेंगे। उस समय गांव में बिल्कुल शान्ति थी यह सब रात के समय हुआ। मेरे पिताजी शोर ज्यादा कर रहे थे मार कम रहे थे। आखिर मैं अपनी माता के पास आया और उससे प्रार्थना की मुझे पिता जी की पिटाई से बचाए लेकिन वह बोली मैं आज कुछ नहीं कर सकती फिर भी मैं याचना करता रहा और उसने मुझे पिटाई से बचा लिया।

उस अनुभव ने मुझ पर ऐसी छाप छोड़ी कि उसके बाद मैंने उस साधु के पास जाना बंद कर दिया। उस समय मैं यह नहीं समझ सका था कि मेरे पिता ने मुझे इस तरह की सजा क्यों दी? बाद में परिणाम बिल्कुल साफ हो गया। तब मैंने महसूस किया अगर मैं उस साधु के पास जाता रहता तो मैं भी सिगरेट और दूसरी बुरी आदतें सीख जाता, अपना जीवन बर्बाद कर लेता।

आज काल ने आत्माओं को फँसाने के लिए बहुत से जाल बिछा रखे हैं। आप देखें! आज आपको विश्वविद्यालयो में कुछ ही अध्यापक मिलेंगे जिन्होंने बहुत ऊँचा और पवित्र चरित्र कायम किया हुआ है। आपको विद्यालयों या विश्वविद्यालयों में भी ऐसे ज्यादा शिष्य नहीं मिलेंगे जिनका अच्छा चरित्र है। जब शिष्य विश्वविद्यालयों में जाता है तो उसके लिए सब कुछ नया होता है लेकिन उसे वहाँ ऐसा कोई शिक्षक नहीं मिलता जो उस पर एक अच्छी छाप छोड़ सके क्योंकि शिक्षकों ने खुद ही अच्छा चरित्र कायम नहीं रखा होता। वहाँ पढ़ाई के साथ-साथ ड्रग्स, सिनेमा और दूसरी चीज़ें भी बताई जाती हैं।

घर में भी पढ़ाई के साथ उनके पास टेलिविज़न, सिनेमा, मैग्जीन और भी बहुत सी चीज़ें हैं जो उनका चरित्र नहीं बनाती। सच तो यह है कि ये सब चीज़ें चरित्र बिगाड़ती हैं। जब लोग इन दुनियावी चीज़ों में घिर जाते हैं तो व्याकुल हो जाते हैं क्योंकि उन्हें ऐसा कोई नहीं मिलता जो उन पर अच्छी छाप छोड़ सके।

कबीर साहब कहते हैं कलयुग में चरस, गांजा और अफीम ने अपने जाल बिछा रखे हैं। लोग अपनी सीमाओं को भूल चुके हैं। नशीले पदार्थों के जाल में फँसकर इस जाल से निकलने का कोई रास्ता नहीं है। ऐसी हालत में ये लोग अभ्यास के लिए समय कैसे निकालेंगे।

कबीर साहब किसी को कटाक्ष नहीं कर रहे लेकिन आप बहुत सख्त शब्दों में कह रहे हैं, ''जब तक आप चरस, गाँजा, शराब और तम्बाकू का नशा नहीं छोड़ देते तब तक आपको आपके प्यारे के दर्शन नहीं होंगे और आप अपने अभ्यास की राह में आगे नहीं बढ़ सकेंगे। शराब पीने के बाद पढ़े-लिखे और ज्ञानी लोगों का सारा ज्ञान और उनकी जेब का पैसा भी चला जाता है। ऐसे आदमी को अपनी और अपने परिवार की होश नहीं रहती, वह अपना दिमाग खो देता है।''

एक मुस्लिम फकीर का कहना है कि शराब सभी पापों की माँ है। एक बार एक राजा यह जानना चाहता था कि इस दुनियां में सबसे बुरी चीज़ क्या है जिससे और भी दोष पैदा होते हैं। राजा ने अपने वजीरों की सलाह पर एक बहुत बड़ा नगर बनवाया। उस नगर के चारों और एक बहुत बड़ी दीवार बनवाई जिसमें चार दरवाजे रखे। राजा ने लोगों को आजमाने के लिए हर दरवाजे पर कुछ न कुछ रखवा दिया। राजा ने एक दरवाजे पर गाय, दूसरे दरवाजे पर वेश्या, तीसरे दरवाजे पर माँस और चौथे दरवाजे पर शराब से भरी एक बहुत बड़ी बाल्टी रखवा दी। चौंकीदारो को दरवाजों पर नज़र रखने के लिए कहा गया। सब लोगों से कहा कि वे उन दरवाजों में से चीजों का आनन्द लेते हुए जाएं।

वहाँ एक अच्छा आदमी था। वह उस नगर को छोड़कर जाना चाहता था। वह पहले उस दरवाजे पर गया जहाँ गाय थी। चौंकीदार ने उससे कहा अगर वह बाहर जाना चाहता है तो उसे गाय को लात मारनी होगी। वह आदमी पढ़ा-लिखा और समझदार था। उसे याद आया कि हिन्दु शास्त्रों में लिखा है कि गाय को मारना बहुत बड़ा पाप है। उसने सोचा मैं इस दरवाजे से नहीं जाऊंगा।

जब उसने दूसरा दरवाजा चुना तो वहाँ एक वेश्या थी। उसने सोचा! शास्त्रों में लिखा है कि औरत के साथ आनन्द लेना अच्छी बात नहीं।

जब वह तीसरे दरवाजे पर गया उसने वहाँ पर माँस देखा। उसने निश्चय किया कि जानवर को मारने के बाद उसका माँस खाना दुनियां का सबसे बड़ा पाप है।

अब उसने चौथे दरवाजे से जाने का निश्चय किया। वहाँ पर उसने शराब से भरी बाल्टियाँ देखी तो सोचा! शराब पीने में क्या बुराई है? शराब तो शहद और चीनी से बनती है। उसने शराब पी ली और शराब पीने के बाद उसे नशा हो गया।

आप जानते हैं कि जब नशा चढ़ता है तो इंसान अपना ज्ञान खो देता है। शराब पीने के बाद उसके मन में माँस खाने की इच्छा उठी और उसने माँस खा लिया। माँस खाने से उसके अंदर काम की इच्छा जागी और उसने वेश्या के साथ आनन्द उठाया। अभी उसमें शराब का नशा बाकी था तो उसने चौथे दरवाजे से जाने की बात सोची। आप जानते हैं जब कोई शराब के नशे में होता है तो उसे चौड़ी सड़क भी बहुत तंग लगती है। वह दरवाजा बहुत चौड़ा था तब भी उसे तंग लगा और उसने गाय को बहुत लातें मारी कि तुमने मेरा रास्ता क्यों रोक रखा है?

शराब पीने के बाद उस पढ़े-लिखे समझदार आदमी ने सारे पाप किए। अगले दिन सुबह जब उसे यह एहसास हुआ कि उसने पिछली रात क्या किया है? तब उसे अफसोस हुआ अगर वह शराब वाले दरवाजे को छोड़कर किसी दूसरे दरवाजे से जाता तो उसके खाते में केवल एक ही पाप होता। वह शराब वाले दरवाजे से गया और शराब पीकर उसने सब पाप किए; ये सभी बुराईयाँ शराब पीने से आईं।

एक बार खूनीचक आश्रम में एक आदमी हमारे सतगुरु जी से मिलने आया। उसने महाराज जी से कहा कि डाक्टरों ने उससे कहा है कि शराब हाजमें के लिए बहुत अच्छी होती है। शराब पीने से चैन की

नींद आती है इसलिए वह शराब को छोड़कर 'नाम' नहीं ले सकता। महाराज जी ने प्यार से कहा, ''तुम यह सोचकर देखो! अगर तुम अगले जन्म में बैल के जामें में आ जाओ जहाँ तुम्हें अच्छा खाना न मिले, वहाँ कोई हाजमें के लिए चूरण देने वाला भी न हो तब तुम अपना खाना कैसे हजम करोगे और कैसे अच्छी नींद सोओगे?'' वह महाराज जी की बात को समझ गया और उसने 'नाम' ले लिया फिर उसने शराब पीना और दूसरी आदतें छोड़ दी।

महाराज सावन कहा करते थे, ''माँस और शराब शरीर के लिए अच्छे नहीं। नशे के आदी जीवन का सागर पार नहीं कर सकते।''

कबीर साहब बहुत सख्त शब्दों में कहते हैं, ''फिर से सोचें और इन चीज़ों को छोड़ दें। जो आदमी किसी भी नशीले पदार्थ का आदी है उसका अभ्यास में तरक्की करने का सवाल पैदा ही नहीं होता। उसे ही समझदार कहा जा सकता है जो सारे नशों को छोड़कर 'शब्द-नाम' का सिमरन पूरे दिल से करे।''

आजकल नशीले पदार्थों की लहर चल रही है। हर जगह लोग नशीले पदार्थों का इस्तेमाल कर रहे हैं। जो लोग नशीले पदार्थ बेचते हैं वे कहते हैं कि इनका सेवन करने से आपका मन एकाग्र होगा और आपके शरीर को आराम मिलेगा। उनकी बातों में आकर लोग नशीले पदार्थों का सेवन शुरू कर देते हैं जोकि दिमाग और शरीर के लिए बहुत नुकसानदायक है। इनके सेवन से आपका शरीर खराब हो जाएगा और आपका दिमाग होश खो देगा।

आपके पास 'नाम' है, आप नाम का सिमरन करें। नाम की दवाई को छोड़कर और कोई दवाई नहीं जो आपके दिमाग को आराम दे सके या आपके मन को एकाग्रता हासिल करने में मदद कर सके।

* * *

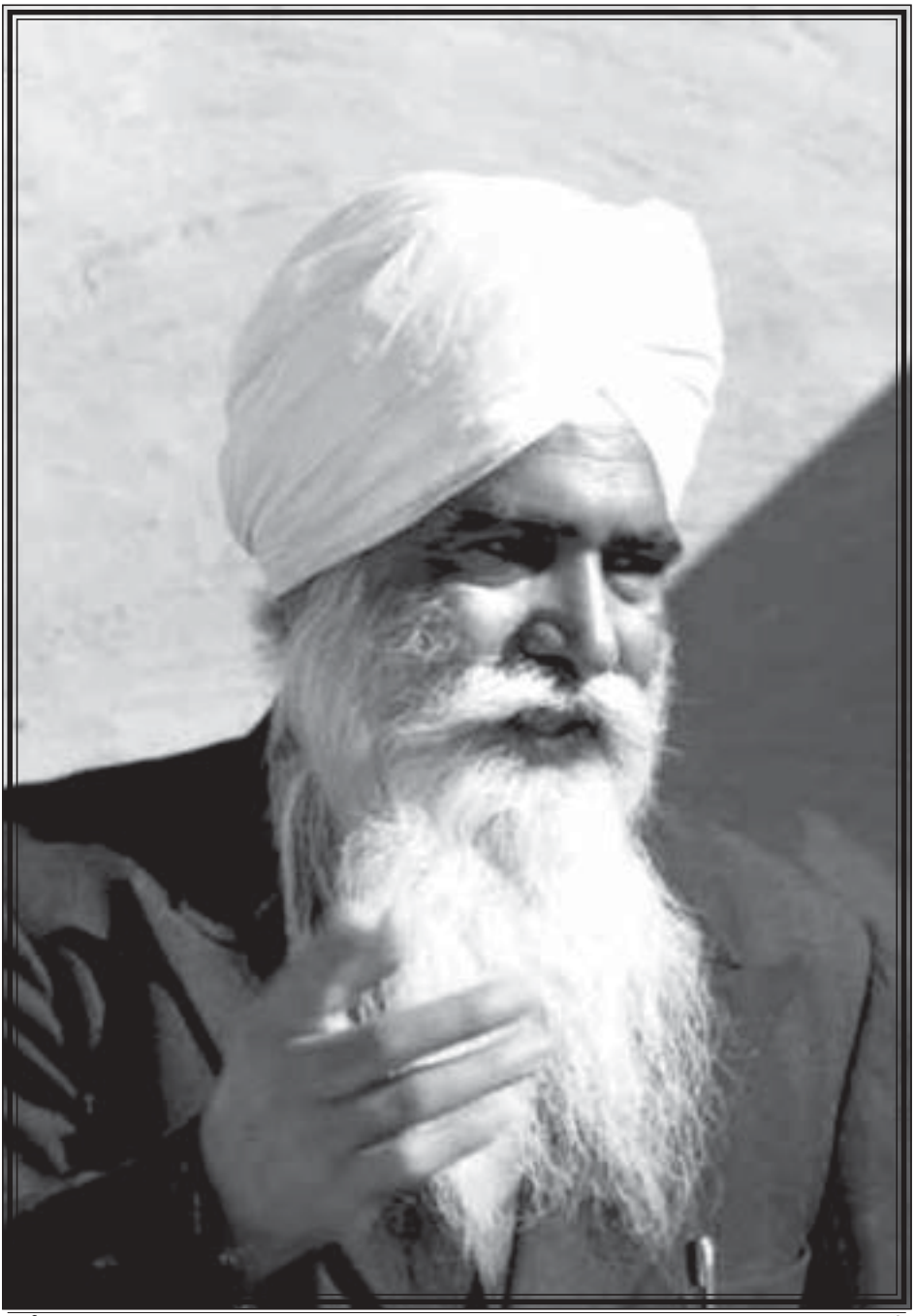

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

सच और झूठ

वारां - भाई गुरदास जी

बैंगलोर

आज फिर आपके आगे भाई गुरदास जी की बानी रखी जा रही है। मैं भाई गुरदास जी की बानी पर सतसंग कर रहा हूँ और हैदराबाद के प्रोग्राम में भी इसी बानी के सतसंग रखे जाएंगे। मैंने आपको पहले भी बताया है कि हमारा इस बानी के सतसंगों पर एक किताब छपवाने का विचार है, यह किताब आपके लिए बहुत उपयोगी होगी।

भाई गुरदास और हमारा मकसद किसी की निन्दा करना नहीं है लेकिन आप जानते हैं कि एक अभ्यासी की जिम्मेवारी है कि वह दुनियां के सामने सच्चाई पेश करे। भजन-अभ्यास करने वाले सन्त की जिम्मेवारी है कि वह दुनियां को **सच और झूठ** के बारे में बताए कि सन्त क्या होता है और उसमें क्या गुण होने चाहिए? भाई गुरदास ने प्रेमियों को सच्चाई बताने के लिए यह बानी लिखी है कि सन्त कैसे बनता है, सन्त की क्या जिम्मेवारी है और प्रेमियों की क्या जिम्मेवारी है?

पृथ्वीचंद, गुरु अर्जुनदेव जी का बड़ा भाई था। गुरु रामदास जी के समय में उस पर संगत की जिम्मेवारी थी। वह संगत की बहुत अच्छी देखभाल किया करता था। जब गुरु रामदास जी ने चोला छोड़ा तो उसे गुरु गद्दी नहीं मिली क्योंकि उसने भक्ति नहीं की थी। गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव जी को गद्दी का उत्तराधिकारी बनाया। गुरु अर्जुनदेव जी बहुत भक्ति वाले अच्छे अभ्यासी थे।

पृथ्वीचंद गुरु नहीं बन सका तो उसे यह अच्छा नहीं लगा। उसने गुरु अर्जुनदेव जी का विरोध किया और अलग से गद्दी बना ली। उसने अपने आपको गुरु रामदास का सच्चा उत्तराधिकारी होने का दावा किया।

भाई गुरदास जी पृथ्वीचंद और अर्जुनदेव जी के मामा लगते थे। आप बुजुर्ग और अच्छे अभ्यासी थे। आपने पृथ्वीचंद को समझाने की बहुत कोशिश की वह अर्जुनदेव का विरोध न करे। जो भजन-अभ्यास करते हैं वही सन्त बनते हैं। सन्तों के अंदर 'नाम' की ताकत परमात्मा द्वारा ही रखी जाती है। सन्त दूसरों की भलाई करते हैं। जो भजन नहीं करते सन्त बन जाते हैं उनके अंदर परमात्मा ने ताकत नहीं रखी होती वे संगत का भला नहीं कर सकते बल्कि संगत को जहर ही देते हैं।

भाई गुरदास ने पृथ्वीचंद को समझाने की बहुत कोशिश की कि उसे सन्त होने का दावा नहीं करना चाहिए। जिसने भजन-अभ्यास किया होता है वही सन्त का कार्य कर सकता है, उसे परमात्मा ने यह कार्य सौंपा होता है। अर्जुनदेव जी गुरु बनने के लायक थे जबकि पृथ्वीचंद में बड़ा होने का अहंकार था और वह यह भी कहा करता था, ''मेरे कारण ही संगत का काम चलता है मैं ही सब कुछ करता हूँ।'' आप जानते हैं कि जहाँ अहंकार है वहाँ कुछ भी नहीं होता।

एक बार गुरु रामदास जी के परिवार में शादी थी। आपके भाई ने आपको परिवार सहित लाहौर आने का निमंत्रण दिया। गुरु रामदास जी ने कहा, ''अगर मैं शादी में आऊँगा तो संगत भी आएगी और संगत का इंतजाम करना बहुत मुशिकल होता है लेकिन मैं अपने किसी बेटे को शादी में भेज दूँगा।'' आपने सबसे पहले अपने बड़े बेटे पृथ्वीचंद को शादी में शामिल होने के लिए कहा। पृथ्वीचंद बहुत अहंकारी था, उसने कहा, ''मैं संगत की देखभाल करता हूँ अगर मैं शादी में जाऊँगा तो संगत की देखभाल कौन करेगा?'' पृथ्वीचंद अपने आपको बहुत महत्त्वपूर्ण व्यक्ति समझता था इसलिए उसने शादी में जाने से इंकार कर दिया।

फिर गुरु रामदास ने अपने मंझले बेटे महादेव से कहा लेकिन वह अपनी मस्ती में रहता था उसने भी शादी में जाने से इंकार कर दिया।

आखिर गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव की तरफ देखा तो अर्जुनदेव समझ गए और शादी में जाने के लिए तैयार हो गए लेकिन जाने से पहले गुरु रामदास जी ने आपसे यह कहा, ''जब तक मैं न बुलाऊँ तब तक वापिस मत आना।''

गुरु अर्जुनदेव शादी में शामिल होने के लिए लाहौर चले गए। गुरु रामदास जी अंदर से अर्जुनदेव को अपनी ओर खींच रहे थे लेकिन वापिस नहीं बुलाया। अर्जुनदेव में बहुत विरह थी, आप इंतजार कर रहे थे कि कब वापिस जाकर अपने सतगुरु के दर्शन करेंगे! आपने अपने सतगुरु को याद दिलाने के लिए पत्र में यह कविता लिखकर भेजी:

मेरा मन लोचै गुर दरसन ताईं, बिलप करे चात्रिक की न्याईं।
त्रिखा न उतरै सांत न आवै, बिन दरसन संत प्यारे जीओ।

जब संदेशवाहक पत्र लेकर पहुँचा उस समय गुरु रामदास जी आराम फरमा रहे थे। पृथ्वीचंद ने संदेशवाहक से कहा, ''मैं यह पत्र गुरु रामदास जी को दे दूँगा।'' पृथ्वीचंद ने वह पत्र अपने पास रख लिया। इस तरह समय बीतता गया लेकिन अर्जुनदेव को कोई संदेश नहीं मिला तो विरह की अग्नि और तेज हो गई, आपने दूसरे पत्र में एक ओर कविता लिखकर भेजी:

तेरा मुख सुहावा जीओ सहज धुन बाणी।
चिर होआ देखे सारिंगपाणी।

पृथ्वीचंद ने यह पत्र भी अपने पास रख लिया। अर्जुनदेव ने तीसरे पत्र पर अंक तीन लिखकर भेजा और संदेशवाहक से कहा कि यह पत्र गुरु रामदास जी के हाथ में देकर आए।

इक घड़ी न मिलते तो कलयुग होता।
हुण कद मिलीऐ प्रिअ तुध भगवंता।

जब गुरु रामदास जी ने तीसरा पत्र पढ़ा तो पहले के दो पत्र खोजने का हुक्म दिया। पृथ्वीचंद ने कसम खाकर कहा, 'मैं पहले के पत्रों के बारे में कुछ नहीं जानता। मेरे हाथ में यही पत्र आया है जो मैंने आपके हवाले कर दिया है।'' गुरु रामदास जी ने एक प्रेमी को पृथ्वीचंद के घर पत्र तलाश करने के लिए भेजा तो पहले वाले दो पत्र पृथ्वीचंद के घर से मिले। पृथ्वीचंद ने गुरु रामदास जी से कहा, ''आप सदा ही कुछ ऐसा करते हैं कि मुझे पीछे धकेल देते हैं, संगत के सामने नहीं आने देते।''

तब तक गुरु रामदास जी ने अर्जुनदेव को लाहौर से वापिस आने का हुक्म दे दिया और कहा, ''जो आगे की कविता पूरी करेगा वही आत्मिक ज्ञान का उत्तराधिकारी होगा।'' गुरु अर्जुनदेव ने आगे की कविता इस तरह पूरी की:

भाग होआ गुर संत मिलाया, प्रभ अबिनासी घर मह् पाया।
सेव करी पल चसा न विछुड़ां, जन नानक दास तुमारे जीओ।

अर्जुनदेव की विरह और तड़प देखकर गुरु रामदास जी ने उन्हें अपने गले लगा लिया। अर्जुनदेव सदा अपने सतगुरु की आज्ञा के अंदर रहते थे उन्होंने अपने मन को गुरु के चरणों में समर्पित किया हुआ था।

जब गुरु रामदास जी ने चोला छोड़ा तो पृथ्वीचंद ने रामदास जी की सारी संपत्ति पर कब्जा कर लिया। पृथ्वीचंद बड़ा था उसका बहुत लोगों के साथ रसूक था। भाई गुरदास, पृथ्वीचंद को समझाने गए कि वह गुरुआई का कार्य न करे क्योंकि उसने भजन-अभ्यास नहीं किया है लेकिन पृथ्वीचंद बहुत अहंकारी था उसने भाई गुरदास की बातों की तरफ ध्यान नहीं दिया; वह जो करना चाहता था करता था। उसके व्यवहार को देखकर भाई गुरदास बहुत उदास हुए। भाई गुरदास ने पृथ्वीचंद के व्यवहार को देखकर ये वारें लिखी हैं।

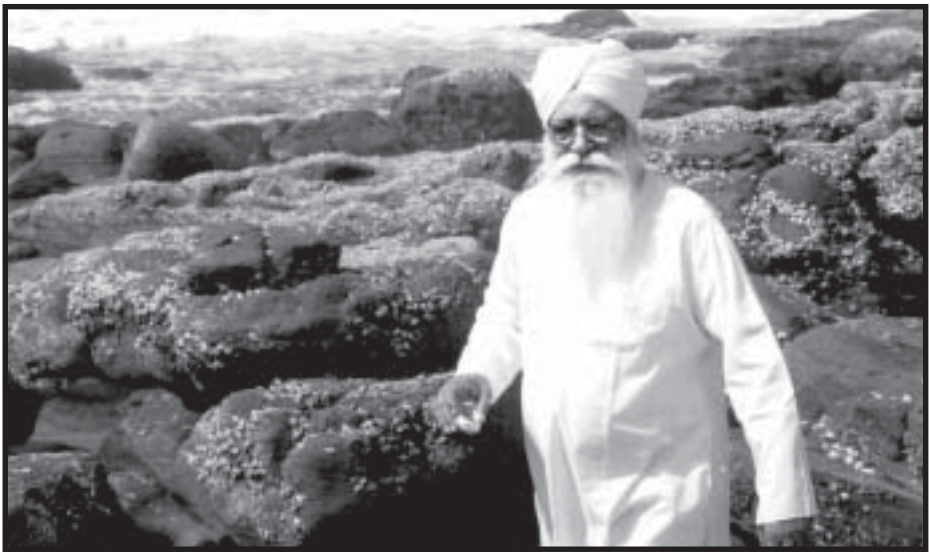

जिन सन्तों ने भजन-अभ्यास किया होता है जब उनको 'नामदान' का कार्य दिया जाता है तो वे खुश नहीं होते। जब गुरु नानकदेव जी ने अंगददेव जी को 'नामदान' का कार्य करने के लिए कहा तो अंगददेव जी ने रोकर कहा, ''हे सतगुरु! यह बहुत बड़ा बोझ है मैं इसे नहीं उठा सकूँगा।'' अंगददेव जी को समझाने के लिए गुरु नानकदेव जी को बहुत मेहनत करनी पड़ी कि उन्हें यह काम करना ही पड़ेगा।

आप महाराज कृपाल का इतिहास जानते हैं कि महाराज सावन सिंह जी ने आखिरी दिनों में नामलेवाओं का रजिस्ट्रर मँगवाकर आपसे नामलेवाओं की गिनती पूछी। महाराज कृपाल ने बताया कि नामलेवाओं की गिनती लगभग सवा लाख है। महाराज सावन ने कहा, ''कृपालसिंह! मैंने तुम्हारा आधा कार्य कर दिया है बाकी कार्य तुमने करना है।''

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जब मैंने यह सुना तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे पैरों के नीचे से धरती खिसक रही है। मैंने सतगुरु के आगे रोकर यही विनती की कि बाकी का कार्य भी आप ही करें।''

जब महाराज सावन ने चोला छोड़ा तो महाराज कृपाल सिंह जी ने अपना घर छोड़ दिया और ऋषिकेश के जंगलों में चले गए। उसके बाद जो कुछ हुआ वह आप सब जानते हैं।

एक बार अंगददेव जी गुरु नानकदेव जी के साथ चल रहे थे तो आपकी बाजू गुरु नानकदेव जी से आगे निकल गई। आपने अपनी बाजू को दण्ड दिया, उसे एक साल तक अपने शरीर के साथ बांधकर रखा।

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि एक बार महाराज कृपाल गंगानगर से करणपुर जा रहे थे। मैं आपके साथ कार में सफर नहीं करना चाहता था क्योंकि आप बहुत थके हुए थे और मैं चाहता था कि आप पिछली सीट पर आराम से जाएं लेकिन आपने मुझे अपने गले लगाकर कहा, ''तुम मेरे साथ आओ मुझे तुमसे बहुत जरूरी बात करनी है।'' वह खास बात यह थी कि आपने वह बात बतानी शुरू की कि किस तरह महाराज सावन ने आपको 'नामदान' का कार्य करने के लिए कहा था। आपने महाराज सावन से कहा था कि यह काम मेरे लिए बहुत मुश्किल है। महाराज सावन ने कहा, ''कृपालसिंह! दुनियां में बहुत से लोग थ्योरी समझाने वाले होंगे अगर तुम 'नामदान' का कार्य नहीं करोगे तो यह अच्छा नहीं होगा क्योंकि लोग थ्योरी ही समझाएंगे, सच्चे 'नामदान' का ज्ञान देने वाला कोई नहीं होगा।''

जब आप मुझे यह सब बता रहे थे तो मैं कांपने लगा और मेरी आत्मा भी कांपने लगी क्योंकि मैं नहीं जानता था कि आप मुझे यह सब क्यों बता रहे हैं। जब आपने मुझे इस हालत में देखा तो आपने कहा कि तुम्हें भी ऐसा ही करना पड़ेगा। तब मैंने आपके सामने अपनी सारी कमजोरियां और कमियां रखी और कहा, ''सतगुरु! आप महान हैं फिर भी लोगों ने आपकी निन्दा की। मैं तो आपके आगे कुछ भी नहीं।'' तब महाराज कृपाल ने कहा, ''जब बुरा बुराई नहीं छोड़ता तो अच्छा अच्छाई

क्यों छोड़े ?'' मैं रोता रहा लेकिन महाराज कृपाल ने कहा, ''कोई नई या अजीब बात नहीं होगी। यह सतगुरु का कार्य है वह खुद ही यह कार्य करेगा; तुम्हें यह कार्य सतगुरु का समझकर ही करना होगा।''

उस समय बहुत से तूफान उठे। आप जानते हैं कि मैंने अपनी जिंदगी का अधिकतर हिस्सा जमीन के नीचे बैठकर बिताया है। सूज़न शैनन उन प्रेमियों में से एक है जो शुरू में मुझसे मिलने के लिए आई थी। उसे याद होगा कि उस समय वहाँ के क्या हालात थे। मैं जिस जगह रहता था वहाँ कोई सुविधा नहीं थी सिर्फ रेगिस्तान था, वह जगह अभी भी सुनसान है। मुझे कोई दुनियावी ज्ञान नहीं था और मैं यह भी नहीं जानता था कि दुनियां में क्या हो रहा है ?

यह सतगुरु की दया ही थी कि मैं बाहर गुरु का संदेश देने के लिए गया। मैं अपने साथ एक छोटा बच्चा लेकर दुनियां में गया। बहुत से लोगों ने मुझसे कहा कि आपका विरोध हो रहा है और आप अपने साथ एक छोटे से बच्चे को लेकर जा रहे हैं, आप अपने साथ किसी समझदार आदमी को लेकर जाएं। मैंने उन लोगों से कहा, ''मैं पप्पू और दिल्ली में किसी को नहीं जानता। यह सतगुरु ही जानता है जिसने मुझे इन लोगों के साथ मिलाया है। यह मिलाप हुजूर कृपाल का है, वही मुझे बाहर भेज रहे हैं; यह उनका कार्य है और वह खुद ही इस कार्य को कर रहे हैं। मैं किसी को नहीं जानता और मुझे किसी का डर नहीं।''

मैंने पहले टूर पर प्रेमियों से कहा, ''अगर आप लोग भजन-अभ्यास करेंगे तो भाषा की समस्या नहीं होगी। जहाँ आत्मा की आत्मा से बात होती है वहाँ किसी पप्पू की जरूरत नहीं।'' बहुत से प्रेमियों ने मुझे पत्रों में लिखा कि जब हमें सतगुरु के तजुर्बे होते हैं; जब हम अंदर जाते हैं तो अनुवादक की जरूरत नहीं होती। आत्मा सतगुरु से अपनी भाषा में ही बात करती है।

चानणि चंद न पूजई चमकै टानाणा।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''चाहे जुगनू रात को कितना भी चमके वह चन्द्रमा का मुकाबला नहीं कर सकता। पाखंडी बाहर से कितना भी बनकर दिखाए लेकिन सन्तों का मुकाबला नहीं कर सकता।''

साइर बूँद बराबरी किउ आखि वखाणा।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''चाहे कितनी भी बूँदे इकट्ठी हो जाएं सागर का मुकाबला नहीं कर सकती।''

कीड़ी इभ न अपड़ै कूड़ा तिसु भाणा।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''चाहे चींटी अपने ऊपर कितना भी घंमड कर ले लेकिन हाथी का मुकाबला नहीं कर सकती।''

ननिहालु वखाणदा मा पासि इआणा।
जिनि तूँ साजि निवाजिआ दे पिंडु पराणा।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''जिस तरह छोटा बच्चा अपने ननिहाल से आता है तो माँ के सामने उस परिवार की प्रशंसा करता है। उसको पता नहीं होता कि उसकी माँ भी उसी परिवार से है जो उस परिवार के बारे में उससे ज्यादा जानती है।''

मुढहु घुथहु मीणिआ तुधु जमपुरि जाणा।।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''हे कपटी! तुम्हें यह पता नहीं कि तुम्हें परमात्मा ने ही बनाया है, परमात्मा ने तुम्हें इतना बड़ा शरीर दिया है अगर तुम परमात्मा की भक्ति नहीं करोगे तो यमपुरी ही जाओगे। तुम पहले भी भूले रहे हो और अब भी भूल गए हो। जब भी गुरु के पास आते हो उसे समझते नहीं, अपने आप में ही खोए रहते हो।''

आप झूठे आदमी को कपटी या मीणा कह सकते हैं लेकिन यहाँ कपटी शब्द का इस्तेमाल पृथ्वीचंद के लिए किया गया है।

कैहा दिसै उजला मसु अंदरि चितै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''चाहे धातु बाहर से कितनी भी चमकीली हो अंदर से काली होती है।''

हरिआ तिलु बूआड़ जिउ फलु कंम न कितै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''तिल के खेत में तिलों जैसे बेकार पौधे भी होते हैं ये पौधे बहुत ऊँचे और दूसरे पौधों से मजबूत होते हैं लेकिन इनमें से तेल नहीं निकलता।''

जेही कली कनेर दी मनि तनि दुहु भितै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''कनेर के फूल देखने में बहुत सुंदर होते हैं लेकिन जहरीले होते हैं।''

पेंझू दिसनि रंगुले मरीऐ अगलितै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''पेंझू फल बहुत सुंदर होते हैं अगर आप इस फल को ज्यादा खा लें तो आप मर जाएंगे।''

खरी सुआलिओ वेसुआ जीअ बझा इतै।

भाई गुरदास जी कहते हैं, ''वेश्या बहुत सुंदर दिखाई देती है लेकिन उसकी संगत दुखदायक होती है, जो भी उसकी संगत में जाता है बहुत दु:ख पाता है।''

खोटी संगति मीणिआ दुख देंदी मितै।

अब भाई गुरदास जी प्यार से कहते हैं, ''पाखंडी या कपटी आदमी की संगत उसके मित्रों के लिए भी दु:खदायी होती है। पाखंडी आदमी

महात्मा की तरह ही लगता है। उसके बातचीत करने का समझाने का तरीका सुंदर हो सकता है लेकिन वह सच्चे महात्मा का मुकाबला नहीं कर सकता क्योंकि उसके अंदर लियाकत नहीं होती कि वह दूसरों की मदद या भलाई कर सके। वह आत्मा को सच्चखंड नहीं ले जा सकता, वह जहर देने में ही समर्थ होता है।''

पाखंडी आत्माओं को धोखा देते हैं। ये लोगों से कहते हैं मैं तुम्हें सच्चखंड ले जाऊंगा मुक्त करवा दूँगा लेकिन ये आत्माओं को नर्क में डालते हैं इसलिए कहा जाता है आत्मघाती महापापी। हमें ऐसे पाखंडियों से सदा दूर रहना चाहिए। पाखंडी गुरुओं के मित्र भी दु:ख उठाते हैं क्योंकि वे पाखंडियों की संगत में ही रहते हैं।

एक बार महाराज कृपाल सिंह अपनी मौज में बैठे हुए थे, अचानक आपने कहना शुरू किया, ''क्या आप जानना चाहते हैं कि सच्चा गुरु कैसा होता है ? सच्चा गुरु पूरी तरह से परमात्मा में समाया होता है उसने सतपुरुष को अपने अंदर प्रकट किया होता है। उसका संसार में अपना कोई स्वार्थ नहीं होता उसका केवल यही स्वार्थ होता है कि किसी तरह ये आत्माएं सच्चखंड वापिस चली जाएं। उसके दिल में सबके लिए हमदर्दी होती है वह आत्माओं को तारने की ताकत रखता है।''

मैंने यह घटना अपनी आँखों से देखी है जिस समय आप सच्चे गुरु के गुण बता रहे थे उस समय महाराज जी की आँखें मस्ती से भरी हुई थी। आपके रोम-रोम से प्रकाश निकल रहा था।

अधिकु नादु सुणाइ कै जिउ मिरगु विणाहै।
झीवरु कुंडी मासु लाइ जिउ मछी फाहै।

भाई गुरदास जी प्यार से एक सुंदर उदाहरण देकर समझाते हैं, ''जिस तरह शिकारी सुंदर नाद सुनाकर हिरण को मस्त कर लेते हैं।

हिरण आकर्षित होकर शिकारी के घुटनों पर अपना सिर रख देता है फिर शिकारी उसे मार डालता है। मछुआरे काँटे पर माँस लगाकर नदी से मछली पकड़ लेते हैं वह मछली को खाना नहीं देते बल्कि वह तो उसे पकड़ने के लिए काँटे पर माँस लगाते हैं। इसी तरह पाखंडी गुरु आत्माओं को आकर्षित करके अपने कार्य में लगा लेते हैं।''

कवलु दिखालै मुहु खिड़ाइ भवरै वेसाहै।
दीपक जोति पतंग नो दुरजन जिउ दाहै।

कमल, भँवरे को आकर्षित करने के लिए अपना मुँह खोलता है जब भँवरा वहाँ आता है तो वह तुरंत ही अपनी पंखुड़ियों को बंद कर लेता है उसी तरह दीपक, पतंगे को जलाने के लिए जलता है।

कला रूप होइ हसतनी मैगलु ओमाहै।
तिउ नकट पंथु है मीणिआ मीलि नरकि निबाहै।।

भाई गुरदास कहते हैं, ''जो लोग हाथी को पकड़ना चाहते हैं वे कागज की हथनी बनाकर गहरा गड्ढा खोद लेते हैं। हाथी हथनी को देखकर काम को रोक नहीं सकता। जैसे ही हाथी हथनी के पास पहुँचता है गड्ढे में गिर जाता है और पकड़ लिया जाता है। उसी तरह पाखंडी गुरु लोगों को आकर्षित करने के लिए यह सब करते हैं और उन्हें नर्कों में ले जाते हैं।'' गुरु साहब कहते हैं:

अंधा गुरु ते अंधा चेला, नर्कों नर्कीं धकम धकेला।

एक बार महाराज कृपाल सिंह जी करणपुर में सतसंग कर रहे थे। सतसंग में आपने कहा, ''भजन-अभ्यास करके ही सन्त बन सकता है लेकिन अब समय आ गया कि सन्त पार्टियों से बनते हैं।'' विरोधियों ने इस बात का पसंद नहीं किया लेकिन यह असलियत थी।

मैं अक्सर कहा करता हूँ कि किसी सन्त के पास जाने से पहले आपको यह जानकारी लेनी चाहिए कि क्या उसने परमात्मा की तलाश में कोई कुर्बानी की है ? क्या उसने दस-बीस साल परमात्मा की भक्ति में लगाए हैं ? भजन करने से ही पर्दा खुलता है, दुनियां के आनन्द उठाते हुए मन का पर्दा नहीं खुलता।

प्यारेयो! सुख की कीमत दु:ख है। सोना खान को खोदकर प्राप्त किया जाता है, मोती प्राप्त करने के लिए गहरे सागर में डुबकी लगानी पड़ती है। कबीर साहब कहते हैं:

सुखिया सब संसार है खाए और सोए, दुखिया दास कबीर है जागे और रोए।

हमारे इलाके का एक प्रेमी महाराज सावन सिंह जी की सेवा में रहा करता था। मुझे उससे मिलने का कई बार मौका मिला है उसने मुझे बताया कि जब महाराज सावन सिंह नौकरी करते थे वह कई-कई रातें जागकर भक्ति किया करते थे। जब नींद उन्हें तंग करती तो आप खड़े होकर भजन किया करते थे।

हम महाराज कृपाल का इतिहास भी पढ़ते हैं और जिन लोगों ने उन्हें देखा है उनसे भी सुनते हैं कि आपने भजन के लिए रावी नदी को चुना। आप रावी नदी में खड़े होकर भजन किया करते थे।

जबकि ये महान गुरु संसार में आने से पहले भी गुरु थे फिर भी आपने संसार में आकर कड़ी मेहनत की, सतगुरु की तलाश की और सतगुरु को पाया। हमने भी इन्हें कठोर भजन करते हुए देखा है कि ये कैसे कामयाब हुए! आपने यह सब सच्चाई बताने के लिए किया ताकि हम जान सकें कि जो कुछ उन्होंने पाया है वह हम भी पा सकें।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''जो काम एक आदमी कर सकता है वही काम दूसरा आदमी भी कर सकता है।''

* * *

धन की सेवा

परम सन्त
कृपाल सिंह जी
महाराज के
मुखारविन्द से

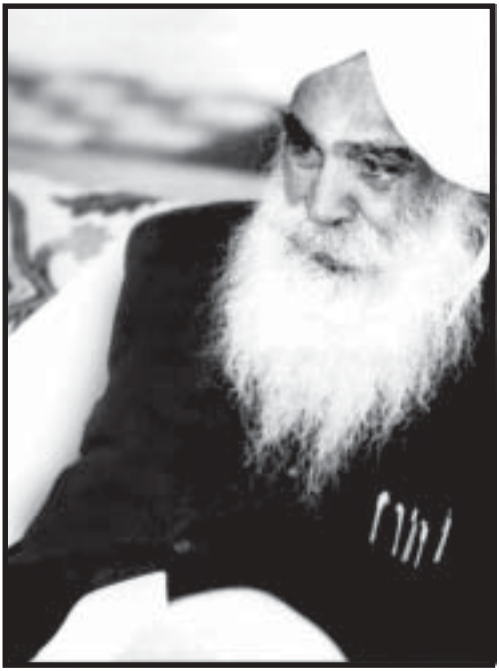

अगर हम धनवान हैं तो अच्छी बात है हमें दूसरों को भी धनवान बनाना चाहिए। ऐसा हम तभी कर सकते हैं जब हमारे पास कुछ है। हमारे सतगुरु बाबा सावन सिंह जी शुरू में दसवंद (अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा) अपने गुरु बाबा जयमल सिंह जी को दिया करते थे। थोड़े समय के बाद आप अपनी सारी कमाई बाबा जयमल सिंह को भेजने लगे। आपके गुरु बाबा जयमल सिंह जी आपकी आमदनी में से परिवार के गुजारे के लिए कुछ दे दिया करते थे।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हमें अपनी आमदनी का दसवां हिस्सा देना चाहिए। अगर आप साल के आखिर में हिसाब लगाएंगे तो आपको पता लगेगा कि आपने बीमारी या दूसरे खर्चों में से बहुत कुछ बचा लिया है; दसवंद देने से आपको कोई घाटा नहीं

होता। आप अपनी कमाई में से जितना ज्यादा हिस्सा देंगे आपको उतनी ही ज्यादा दया मिलेगी।'' सतगुरु जब संसार में आते हैं तो अपना सब कुछ अपने गुरु को अर्पित कर देते हैं।

क्राईस्ट ने कहा है, ''अगर आप परमात्मा के राज्य में प्रवेश करना चाहते हैं तो अपना सब कुछ बेच दें।'' हर आदमी को ईमानदारी से रोजी-रोटी कमानी चाहिए, अपनी आमदनी से दूसरे लोगों की मदद करनी चाहिए, जमाखोरी नहीं करनी चाहिए अगर आप जमाखोरी करेंगे तो आप अंदर से कठोर हो जाएंगे। अगर आप सोने या चाँदी को हाथ पर रगड़ेगे तो आपका हाथ काला हो जाएगा।

जब से इतिहास शुरू हुआ है यही रीति रही है। इब्राहिम के समय में भी सब लोग दसवंद दिया करते थे। अगर आप रूहानियत में स्वयं की सेवा करना चाहते हैं तो आपको अपनी रोजी-रोटी ईमानदारी से कमाते हुए दूसरे लोगों की मदद करनी चाहिए, आप थोड़े से शुरू करें और बाकी परमात्मा पर छोड़ दें।

निस्वार्थ सेवा दो तरह से की जाती है। पहला तरीका तन की सेवा है अगर कोई बीमार है तो आप उसकी सेवा करें। सतगुरु सदा गरीबों और जरूरतमंदो को दिलासा देने और उन्हें दूसरों के बराबर बनाने के लिए आते हैं। अगर हम भी दूसरे लोगों की **धन से सेवा** करें तो संसार में कोई गरीब नहीं रहेगा आप जिस समय किसी की मदद कर रहे होते हैं तो आप अपने अंदर थोड़ी सी खुशी महसूस करते हैं।

जब आप किसी की मदद करते हैं तो इस आशा से मत करें की इसके बदले आपको कुछ मिलेगा। कभी-कभी हम कुछ इसलिए देते हैं कि हमें स्वर्ग का सुख मिलेगा जोकि सही तरीका नहीं है। निस्वार्थ भाव से सेवा करना रूहानी सफर पर आगे बढ़ने की पहली सीढ़ी है। हमें उनकी मदद करनी चाहिए जो किसी हालात में गरीब हो गए हों, गुजारा

न कर सकते हों। हम अपने बच्चों को अच्छा खाना खिलाते हैं जबकि पड़ोसी के बच्चे भूखे मरते हैं।

एक मुसलमान सन्त महिला थी, उसने मक्का के हज की तैयारी की। अरब में मक्का मुसलमानों का तीर्थ स्थान है। सन्त महिला के पास सफर के लिए पैसे थे और वह मक्का जाने के लिए तैयार थी लेकिन उसने पड़ोस में एक गरीब और भूखे व्यक्ति को देखा। उस महिला ने अपने पैसे उस व्यक्ति को दे दिए और वह हज के लिए नहीं जा सकी। जिसका नतीजा यह हुआ कि एक फरिश्ता उसके सामने प्रकट हुआ और उस फरिश्ते ने कहा, ''तुम्हारा हज कबूल हो गया है।''

जो व्यक्ति ईमानदारी से खून-पसीने की कमाई से अपना पेट पालता है और दूसरों की मदद करता है वह रूहानी मार्ग की चढ़ाई के लायक है। एक बार क्राईस्ट लोगों के साथ बैठे हुए थे उनकी माता आकर उनके पीछे बैठ गई। किसी ने क्राईस्ट से कहा कि आपकी माता आई है। क्राईस्ट ने कहा, ''सभी मेरे भाई, बहन और माताएं हैं।''

जब हमारे सतगुरु अपने गाँव गए तो गरीब लोग भी उनके पास आए आपने उनकी खातिरदारी की। जो दूसरों की सेवा करता है और दूसरों के लिए जीता है वह सही इंसान है। आप थोड़े से शुरू करें चाहे वह आपकी आमदनी का दसवां हिस्सा है या चालीसवां हिस्सा है लेकिन कुछ न कुछ अवश्य दें।

यहाँ सब हिसाब-किताब रखा जाता है और नियमित रूप से चार्टड एकाउंटेन्ट से चैक करवाया जाता है जिससे मुझे कुछ लेना-देना नहीं है। मेरे लिए मेरी पेंशन की आमदनी ही काफी है। एक बार हिसाब-किताब की जाँच हो रही थी उस समय एक गरीब महिला एक पैसा लेकर आई एकाउंटेन्ट ने कहा, ''कोई पचास रूपये देता है कोई सौ रूपये देता है लेकिन इस महिला की यह सेवा सबसे ज्यादा कीमती है।''

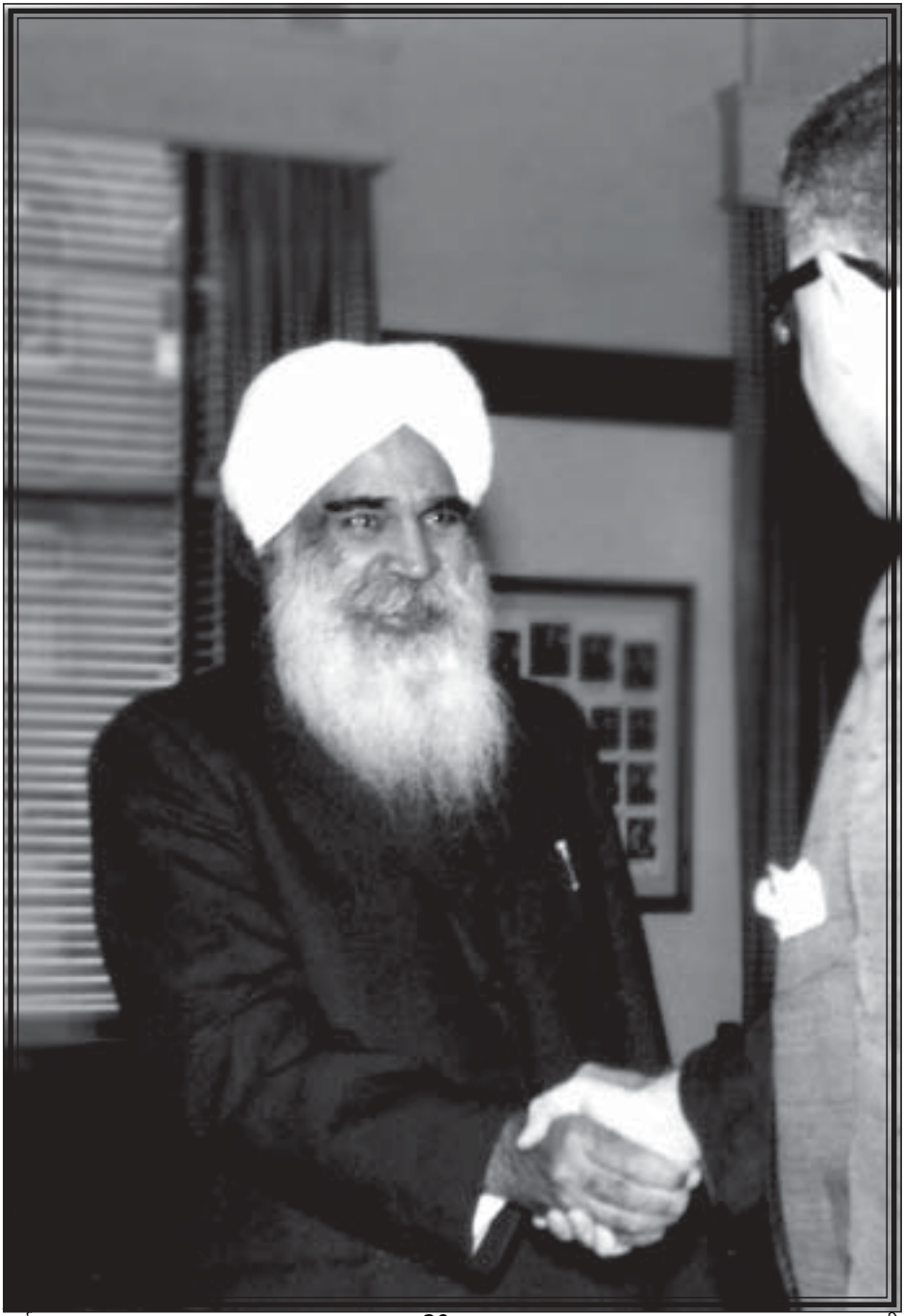

मैंने यहाँ नियम बना रखा है कि जो लोग तीस-चालीस रूपये से अधिक देना चाहते हैं वह पहले मेरे पास आएं। मैं देखूंगा कि वह इतने रूपये देने के लायक हैं या नहीं? कभी-कभी हम भक्ति के वश होकर अपने बाल बच्चों के पालन-पोषण की कुर्बानी करके सब कुछ दे देना चाहते हैं। जो थोड़ा देते हैं उनका स्वागत है उनकी सेवा को बड़ी इज्जत के साथ स्वीकार किया जाता है। मैंने देखा है कि कुछ लोग इतना धन देने की स्थिति में नहीं होते वे गुप्तदान के रूप में सेवा भेजना चाहते हैं।

मैं कभी-कभी मना कर देता हूँ और कभी आधा ही स्वीकार करता हूँ। कुछ लोग भक्ति के वश होकर सेवा देकर अपने परिवार की देखभाल नहीं करते। एक आदमी एक सौ पचास रूपये महीना दिया करता था जबकि उसकी मासिक आमदनी दो सौ रूपये से ज्यादा नहीं थी। जब मैंने मामले की जांच की तो पता चला कि उसने गुप्त दान दिया था। मैंने सतसंग के दौरान उस आदमी को अपने पास बुलाया। मैंने उसके पैसे अपने पास रखे हुए थे, वह पैसे उसे वापिस दे दिए।

शिष्य की यह रीति है कि वह सब कुछ गुरु को अर्पित कर दे और गुरु की रीति यह है कि वह शिष्य से अपने लिए कुछ न ले। शिष्य सतगुरु को भले काम के लिए धन दे सकता है लेकिन सतगुरु को भी देखना चाहिए कि वह कितना देने में समर्थ है अगर शिष्य अपने बाल-बच्चों की भलाई नहीं देखता तो यह अच्छा नहीं।

मैंने यहाँ पर यह नियम बना रखा है कि जो निश्चित धनराशि से अधिक देना चाहते हैं पहले वे मेरे पास आएं। एकाउंटेन्ट दिलीप सिंह को खास हिदायत की गई है कि वह दस, बीस, तीस रूपये तक स्वीकार कर सकता है लेकिन जो लोग अधिक धन देना चाहते हैं उन्हें मेरे पास भेजा जाए। मैं कभी स्वीकार कर लेता हूँ कभी स्वीकार नहीं करता कभी आधे पैसे लौटा देता हूँ। अपनी हैसियत के अनुसार दूसरों की

मदद करनी चाहिए। जो दसवां हिस्सा नहीं दे सकते उन्हें चालीसवां हिस्सा देना चाहिए; वे एक पैसे से भी मदद कर सकते हैं।

आप जानते हैं कि मैं ऐसे लोगों का धन स्वीकार नहीं करता जिन्हें 'नामदान' नहीं मिला। कौन जानता है कि वे कैसे कमाते हैं? उनकी संभाल कोई नहीं करता, वे जब देंगे तो उसके बदले में कुछ देना पड़ेगा। जिसे नामदान मिल जाता है सतगुरु उसकी संभाल करते हैं। इस आशा से दान नहीं देना चाहिए कि आपको अगले जन्म में कुछ मिलेगा।

हम सब परमात्मा के बच्चे हैं। हम सब परमात्मा के दरबार में भाई-बहन हैं। ये बातें ग्रन्थों में नहीं समझाई गई हैं। आप खुद के लिए कुछ भी स्वीकार न करें। ईमानदारी से रोजी-रोटी कमाकर दूसरों की मदद करें अगर आप अपने परिवार की हालत के मुताबिक अधिक धन दे सकते हैं तो आप परमात्मा के लिए सब कुछ अर्पित कर सकते हैं।

पेशावर में एक बाबा काहन थे। सावन सिंह जी जब उनके पास जाते तो उन्हें दस रूपये दिया करते थे। बाबा काहन वह पैसा गरीबों में बाँट दिया करते थे। एक बार महाराज सावन सिंह जी मैदानी सेवा पर गए, वहाँ से उन्हें एक हजार या दो हजार की कमाई हुई, उस समय आप जब बाबा काहन के पास गए तो बाबा काहन ने सावन सिंह जी से कहा, ''इस बार मैं तुमसे बीस रूपये लूंगा।'' महाराज सावन ने कहा, ''बाबा! क्या आप लालची हो गए हैं?'' बाबा काहन ने कहा, ''बिल्कुल नहीं! इस बार तुमने ज्यादा पैसा कमाया है। मैं चाहता हूँ कि उसका ज़हर निकल जाए और यह पैसा दूसरों की मदद में लग जाए।'' बाबा काहन अपने लिए कुछ नहीं लिया करते थे।

अगर हम कुछ देकर उसके बदले में कुछ चाहते हैं तो यह निस्वार्थ सेवा नहीं है। आपकी डायरी में इसके लिए एक जगह रखी गई है

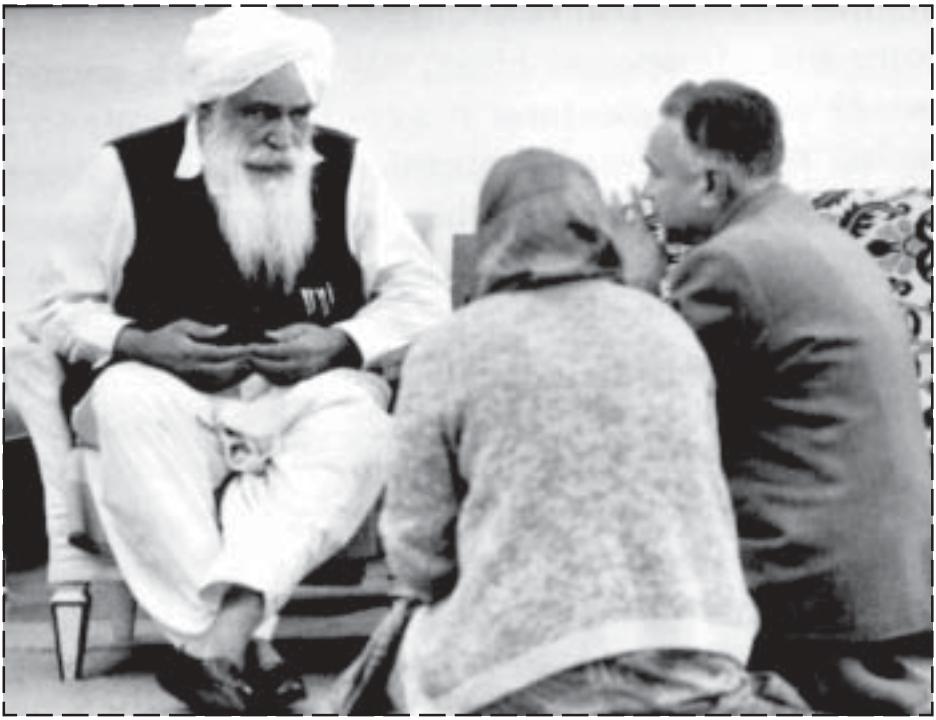

जिसका मतलब है यह आपकी भलाई के लिए है। आप लोग **धन की सेवा** का अर्थ समझ गए होंगे।

अगर हम कुछ देकर उसके बदले में कुछ चाहेंगे तो क्रिया की प्रतिक्रिया होगी। जिस माता के बच्चे भूखे हों वह स्वयं के मुँह से निवाला निकालकर अपने बच्चों को दे देगी बदले में कुछ भी पाने की इच्छा नहीं करेगी। आप इस तरह का दृष्टिकोण अपनाकर दूसरों की मदद करें। हम कभी नाम और प्रसिद्धि के लिए दिखावे का दान देते हैं यह **धन की सेवा** नहीं है।

क्राईस्ट ने कहा है, ''एक हाथ से दान दें तो दूसरे हाथ को भी पता नहीं लगना चाहिए।'' यह **धन की सेवा** का मतलब है।

* * *

दिल्ली में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से दिल्ली में 18,19 व 20 मई 2012 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

कम्युनिटी हाल,
भेरा इन्कलेव, पश्चिम विहार,
(नज़दीक पीरा गढ़ी चौक)
नई दिल्ली - 110 087

अहमदाबाद में सतसंग का कार्यक्रम

गुरु प्यारी साध संगत,

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज की दया से अहमदाबाद में 6,7 व 8 जुलाई 2012 को नीचे लिखे पते पर सतसंग के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। प्रेमी भाई-बहनों के चरणों में विनती है कि सतसंग में पहुँचकर सन्त वचनों से लाभ उठाएं।

श्री देशी लोहाणा विद्यार्थी भवन,
फुटबाल ग्राउंड के सामने,
(कांकरिया झील के पास)
अहमदाबाद - 380 008 (गुजरात)